स्नातकोत्तर हिन्दी
सेमेस्टर - 2
पत्र - 6

डॉ. पूनम कुमारी
अध्यक्ष - हिन्दी विभाग,
एस. बी. कालेज, आरा

तुलसी की भक्ति भावना

गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण धारा के अन्तर्गत आने वाली रामकाव्य धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। भक्ति का मूल तत्व है महत्व की अनुभूति। इस अनुभूति के साथ ही दैन्य अर्थात अपने लघुत्व की अनुभूति का उदय होता है। इस अनुभूति को दो ही पंक्तियों में गोस्वामी जी ने बड़े सीधे - सादे ढंग से कह दिया है -

राम सों बड़ो है कौन, मोसों कौन छोटो?
राम सों खरो है कौन, मोसों कौन खोटो?

प्रभु के महत्व के सामने होते ही भक्त के हृदय में अपने लघुत्व का अनुभव होने लगता है। उसे जिस प्रकार प्रभु का महत्व वर्णन करने में आनन्द आता है, उसी प्रकार अपना लघुत्व वर्णन करने में भी आनंद आता है। अपने इष्टदेव राम के प्रति उनके मन में अनन्य प्रेम भक्ति-भाव श्रद्धा, विश्वास एवं भरोसा व्याप्त है। श्रद्धा और विश्वास ही तुलसी की भक्ति भावना के मेरुदण्ड हैं। अपने सभी काव्य-ग्रंथों में गोस्वामी जी ने राम के प्रति अनन्य भक्ति - भाव व्यक्त किया है, इसलिए उन्हें राम का एकनिष्ठ एवं अनन्य भक्त कहा गया है। वे चातक को प्रेम और भक्ति का परम आदर्श मानते हुए कहते हैं :

एक भरोसो एक बल एक आस विस्वास।
एक राम घनस्याम हित चातक तुलसीदास॥

तुलसी की भक्ति दास्य भाव की भक्ति है। वे अपने प्रभु राम के प्रति पूर्ण समर्पित थे और रामचरितमानस में वे स्पष्ट घोषणा करते हैं कि "सेवक-सेव्य" भाव के बिन कोई भक्ति इस संसार

सागर से कोई तर नहीं सकता -
सेवक - सेव्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि।
तुलसी की भक्ति पद्धति में 'नवधा भक्ति' का पूर्ण स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। 'नवधा भक्ति' के अन्तर्गत श्रवण, कीर्तन, पाद सेवन, अर्चना, वन्दना, दास्य, सख्य, नाम स्मरण और आत्मनिवेदन आते हैं। तुलसी ने राम नाम की महिमा का प्रतिपादन स्थान-स्थान पर किया है। 'कवितावली' में तुलसी ने अपने आराध्य के शील-शक्ति-सौन्दर्य की महिमा का प्रशस्ति-गान और उनके रक्षक-रूप का वर्णन किया है। तुलसी ने वाल्मीकि, गज, गणिका और अजामिल जैसे पापियों के उद्धार का प्रसंगोल्लेख कर यह सिद्ध किया है कि श्रीराम सचमुच ही ईश्वर के अवतार हैं -
राम बिहाइ 'मरा' जपते बिगड़ी सुधरी कवि कोकिल हूँ की।
नामहिं ते गज की, गनिका की, अजामिल की चलि गै चलचूकी।
'राम' शब्द के स्थान पर विपरीत अक्षर क्रम वाले 'मरा' शब्द का जप करने से कवि कोकिल वाल्मीकि की बिगड़ी सुधर गयी थी। गजेन्द्र, वेश्या गणिका और अजामिल ने राम नाम का स्मरण किया और उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हो गई थी।
तुलसी की भक्ति पद्धति में विनय की सातों भूमिकाएं दैन्य, मानमर्षता, भयदर्शना, भर्त्सना, आश्वासन, मनोराज्य एवं विचारणा का समावेश है। रामचरितमानस के 'ज्ञान-भक्ति' (का साधन वैराग्य को मानते हैं) प्रसंग में वे भक्ति की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हैं। उन्होंने भक्ति मार्ग की तुलना में ज्ञान मार्ग को असहज बताया है। तुलसी की भक्ति-भावना में उन एकादश आसक्तियों को भी स्थान मिला है जिनका उल्लेख 'नारद भक्ति सूत्र' में किया गया है। इन आसक्तियों के नाम हैं - रूपा सक्ति, कान्ता सक्ति, तन्मयता सक्ति, परम विरहासक्ति, शरणागत वत्सलता, गुण माहात्म्यासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणा सक्ति, दास्यसक्ति, सख्यासक्ति, आत्मनिवेदना सक्ति।
इस विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि तुलसी भक्त पहले हैं कवि बाद में। आचार्य शुक्ल के अनुसार "लोक संग्रह का भाव उनकी भक्ति का एक अंग था... यही कारण है कि इनकी भक्ति रस भरी बाणी जैसी मंगल कारिणी मानी गई वैसी और किसी की नहीं।"